यीशु कौन है?

"क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं
कि पह प्रभु है; और अपने विषय में यह
कहते हैं कि हम सीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं।"
2 कुरंथियों 4:5

पीटर वॉकर

www.1peter1three.weebly.com

Translated and designed by
Good Shepherd Media, Secunderabad 500 067
E-mail: printing@ombooks.org

विषय-सूची

परिचय 5

यीशु कौन है? 7

ख्रीष्ट का संदेश 9

विश्वास 11

खजाना 14

लहू 16

आत्मा 18

निमंत्रण 20

नया जीवन 23

उद्धरित धर्मशास्त्र 26

इस पुस्तक को मैं आप पाठकों को समर्पित करता हूं। मुझे आपके साथ यीशु मसीह के बताने देने की अनुमति देने के लिए आपको धन्यवाद।

न ही मुझे बाइबिल की औपचारिक शिक्षा प्राप्त हुई है और न ही मैं स्पष्टता से जानता हूं कि धर्मविज्ञान के मुद्दों पर मैं कहां खड़ा हूं। फिर भी मैं यीशु का अनुयायी हूं और मैं धर्मशास्त्र से प्रेम रखता हूं। मुझे कुछ विचार बांटने की अनुमति प्रदान कीजिए ....

परिचय

यदि आप यह प्रश्न पूछ रहे हैं – "यीशु कौन है?" – आप सचमुच एक अद्‌भुत स्थान में हैं!

हो सकता है इस समय आप परमेश्वर से क्रोधित हों या परमेश्वर पर विश्वास न करते हों। अथवा हो सकता है कि आप परमेश्वर पर विश्वास तो करते हों परन्तु किसी बात से चोट खाए हों। हो सकता है आप एक मुसलमान, एक हिन्दू या बौद्ध के माननेवाले हों या कोई अन्य विश्वास के मानने वाले हों। आप पूरी रीति से किसी भिन्न स्थान में हों जिसे आप स्वयं परिभाषित न कर सकें ... मेरे मित्र चाहे आप कैसा भी महसूस कर रहे हों या जहां भी आप हों, बाइबिल का परमेश्वर – पहली पुस्तक से लेकर अंतिम तक – आप का स्वागत् करता है और आपको यह प्रश्न पूछने की अनुमति देता हैः **"यीशु कौन है?"**

आपके पास अनेकोनेक प्रश्न हो सकते हैं जिनका मैं उत्तर न दूं। सचमुच इस छोटी पुस्तिका में मैं आपके पास यीशु के एक "विश्वासी" की हैसियत से आता हूं और आपके साथ कुछ विचार बाटूगा। मेरा विश्वास, बाइबिल और परमेश्वर का आत्मा मेरे श्रोत हैं।

मैं विश्वास करता हूं कि बाइबिल – 66 "पुस्तकों" या लेखों का संग्रह – परमेश्वर का अनुप्राणित वचन है। किसी भी अन्य अच्छी या "सत्य" चीज के समान बाइबिल को भी गलत समझा जा सकता

है या दुरूपयोग किया जा सकता है और उस पर शंका भी की जा सकती है। तौभी मनुष्य के द्वारा बाइबिल का उपयोग करने में गलती के बावजूद यह सत्य के ईमानदार खोजियों के लिए यह परमेश्वर का विश्वसनीय श्रोत बना रहता है। यह "अप्रशिक्षितों" के द्वारा लिखा गया था जिससे यह पढ़ने में सरल रहे। परमेश्वर ने बाइबिल में स्वयं को हम से लहीं छुपाया है; उसने स्वयं को हम पर प्रगट किया है!

अब मुझे इस सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न पर अपने विचार रखने की शीघ्रता करने दीजिए: **"यीशु कौन है ?"**

यीशु कौन है?

बाइबल हमें सिखाती है कि यीशु मसीह – जिसका अर्थ है *"यीशु बचाता है"* – मानवरूप में परमेश्वर है। परमेश्वर मनुष्य बनने के लिए स्वर्ग से नीचे उतर आया ताकि हम परमेश्वर को "व्यक्तिगत् रीति से जान सकें और परमेश्वर के साथ पूर्ण रीति से जुड़ सकें।

यीशु "शारीरिकरूप मे" परमेश्वर है। वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें अनन्त जीवन देने आया। यह उत्तर है कि यीशु *"कौन"* है और वह *"क्यो"* आया।

प्रकाशनः

स्वयं बाइबिल हमें बताती है कि यह अथाह सत्य है और समझने में असंभव है। हम सरलता से इस सत्य को नहीं "समझ सकते" – कि परमेश्वर हमें बचाने के लिए मानवरूप में उतर आया। हम इसे नहीं "पा" सकते! यह हमारे लिए बहुत बड़ा है! हां, बाइबिल हमें बताती है कि यह सत्य – ऐसा अद्‌भुत सत्य – हमारे मनों में समाने के लिए नहीं बनाया गया है!

हमें बताया गया है कि परमेश्वर का यह सत्य – यीशु मसीह – *"आत्मा और सत्य"* है और वह हमारे मनों में समझने के द्वारा नहीं परन्तु हमारे हृदयों में हमारी आत्माओं में "प्रकाशन" के द्वारा आता है।

यदि आप – मेरी और अन्यों की तरह – परमेश्वर को समझने का प्रयास करें या अपने मनों में समाने का कार्य करें, हमारी आत्माओं और हृदयों का चालक की कुर्सी पर आसीन होना बहुत कठिन हो सकता है। परन्तु मेरे मित्र आप जानते हैं जीवन में अभी जो कुछ आपको बहूमूल्य लगता है – *मित्र, परिवार, आनन्द, शान्ति, क्षमा, करूणा* – ये बातें मन के नहीं परन्तु हृदय और आत्मा के "सत्य" हैं। सच यह कि अनेक मामलों में हम ने अपने मन, अपनी समझ को "दिल की सच्चाई" को चोट पहुंचाने या क्षतिग्रस्त करने दिया है। ***क्या आपने कभी अपने "मन" को अपने दिल को अनसुना करने दिया है और उसके पश्चात् इसके लिए पछताए हैं?*** यदि परमेश्वर मेरे "चंचल" मन या मेरे "चंचल" समझ में समा जाए, तो सचमुच वह बहुत छोटा परमेश्वर होगा!

हमें बाइबिल में बताया गया है, *"परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।"* यीशु ने स्वयं अपने वचनों और प्रकाशन के लिए यह कहा, *"मेरी बातें आत्मा और जीवन हैं।"*

?

क्या आपने यीशु की सच्चाई को आपके मन के लिए चुनौती परन्तु आपने दिल के द्वार पर खटखटाने की आवाज केरूप में अनुभव किया है?

ख्रीष्ट का संदेश

यीशु का लोगों को उनके *"विश्वास"* की दुहाई देना रोचक है। वह लोगों को धन यारूपया बांटते नहीं आया। वह धर्म विज्ञान के प्रश्नों का उत्तर देते भी नहीं आया। उसने ऐसा कुछ कहा, *"क्या कोई प्यासा है? वह मेंरे पास आए ... जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, उसके ह्रदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगीं।"* यीशु ने पूछा कि क्या हम प्यासे हैं, और उसने "जीवन के जल" की प्रतिज्ञा किया। यह हमारे दैनिक अर्थव्यवस्था में सही नहीं "बैठता"; यह हमारे मनों में सही नहीं "बैठता।" तौभी यह हमारे मनों में गहरे उतर जाता है और यह हमारी कुछ और अधिक की खोज को पूरा करता हुआ लगता है।

क्या यीशु का यह पश्न – क्या तुम प्यासे हो? – आपके मन में स्पन्दन उत्पन्न करता है?

या उदाहरण के लिए, यीशु जनसमूह की ओर मुड़ा और पूछा, *"क्या कोई श्रमित है?"* तब उसने विभिन्न प्रकार के *"विश्राम"* की प्रतिज्ञा किया।

यीशु ने आश्चर्यकर्म किए परन्तु उनके पास अपने आश्चर्यकर्मों के लिए अति विशेष उद्देश्य था। एक बार यीशु ने एक बड़ी भीड़ से कहा कि उसके आश्चर्यकर्म करने का कारण यह था कि हम

समझें कि उसे पाप क्षमा करने का अधिकार है। उसने कुछ लोगों के जीवन को थोड़े समय के लिए बेहतर करने हेतु आश्चर्यकर्म नहीं किए। उसने आश्चर्यकर्म इसलिए किए ताकि हम उसके पाप क्षमा करने की और *"हमारे नामों को स्वर्ग में लिखने"* की सामर्थ्य को देख सकें।

अतः उसका संदेश क्या था? मैं कैसे इस जीवन, इस विश्राम और इस जीवन के जल को अपने मन में पा सकता हूं?

यहां यीशु का संदेश जीवन में आता है – अक्षरशः और व्यक्तिगत् ...

यीशु ने कहा, *"द्वार मैं हूँ, यदि कोई मेरे द्वारा प्रवेश करे, तो उद्धार पाएगा।"* यीशु ने परमेश्वर के बारे नहीं सिखाया; यीशु ने परमेश्वर को जानने के लिए हमें अपने पास आमंत्रित किया। ठीक इस समय आपके जीवन में जो सर्वाधिक गहरी बात है वह "कोई" है, "कोई चीज" नहीं और न ही कोई विचार धारा। एक मिनट के लिए इस पर विचार कीजिए। ***दिन की समाप्ति पर आपके लिए सर्वाधिक बहूमूल्य चीज क्या है?*** मैं गारंटी देता हूं वह एक व्यक्ति है। परमेश्वर इसके ही समान है। आपके लिए परमेश्वर की सर्वाधिक गहराई – वह स्वयं है। मनुष्य बनने के पीछे उसका उद्देश्य यह था कि हम उसे यथार्थ में देख सके, स्पर्ष कर सके और उसे जान सकें। सच यह, कि यीशु को एक नाम दिया गया था जो "ईम्मानुएल" है, जिसका अर्थ है *"परमेश्वर हमारे साथ।"* यीशु – मनुष्य केरूप में परमेश्वर – आया ताकि वह हमारे साथ रह सके, अभी और अनन्तकाल तक।

?

क्या आप परमेश्वर को व्यक्तिगत् रीति से जानना चाहते हैं?

विश्वास

यीशु हमें उस पर *"विश्वास"* करने की चुनौती देता है। जब वह सचमुच लोगों के साथ थे और वे उसे देख सकते थे तब यही उनका आमंत्रण था। *यदि वे उसे देख सकते थे तब उस पर विश्वास करने पर इतना जोर क्यो? "विश्वास"* के इस विषय पर दो बातें मेरे सामने आती हैं:

1. एक सच्चा मित्र आप के उपर विश्वास करता है!

क्या कभी आपका कोई "मित्र" ऐसा हुआ जो आपके लिए नहीं हो? यह व्यक्ति आपको देखता और आपको जानता है और जब भी आप उसके आस पास हो वह आपको स्वीकार भी करता है; इस व्यक्ति का आपके साथ सम्बंध भी है परन्तु वे आपके उपर विश्वास नहीं करते हैं। यथार्थ में उन्होंने अपने हृदय का एक भाग आपके प्रति बन्द कर रखा है। ***क्या आप इस एहसास को, सम्बंध में इस अनुभव को महसूस कर सकते हैं?***

यीशु आया – परमेश्वर मानव शरीर में – हमारे साथ रहने के लिए। उसके नाम ईम्मानुएल का अर्थ ही *"परमेश्वर हमारे साथ"* होता है।[1] यीशु सिर्फ यह नहीं चाहते कि आप उसे "मान लें"; वह

---

1 यशायाह 7:14; मत्ती 1:23

आपके साथ प्रेम करने और "विश्वास" सम्बंध रखने आया। *परस्पर विश्वास सच्चे सम्बंध को जीवन देने वाला लहू है।*

यीशु ने कहा, "मैंने तुम्हे अपना मित्र कहा है।" यीशु ने यह भी कहा कि एक मित्र के लिए अपना तीवन बलिदान करने की अपेक्षा प्रेम प्रगट करने का इससे बड़ा तरीका और नहीं है।[2]

2. देखना विश्वास करना नहीं होता है!

जब यीशु इस पृथ्वी पर थे अनेक लोगों ने उसकी सामर्थ्य को देखा परन्तु उस पर विश्वास नहीं किए। हो सकता है मेंरी ही तरह आप भी कभी कभी यह ईच्छा रखते या कहते हों, *"काश मैं यीशु को सचमुच में "देख" सकता।"*

सच्चाई यह है कि अनेक – अधिकांश – जिन्होंने उसे शरीर में देखा और उसके चमत्कारी सामर्थ्य के गवाह बने उस पर विश्वास नहीं किए। सच यह कि अनेक बार जब उसने आश्चर्यकर्म किए लोग सचमुच उसके विरूद्ध हो गए। अंत में, प्रत्येक जिसने उसे "देखा" – जिन्होंने उसे देखा, उसके साथ चले, उसके चिन्हों और चमत्कारों को देखे – या तो उसके विरूद्ध षडयंत्र रचे या उसे त्याग कर चले गए। वह सब के सामने जिन्होंने उसे देखा था, दिन–दुपहरी मार डाला गया।

अतः यीशु हमें "देखने" नहीं पर "विश्वास करने" या "भरोसा करने" का आह्वान करता है। जब आदमी ने उसे देखा, उसने उसकी हत्या की। जिसे हम अपनी आंखों से देखते हैं उसका अनुसरण करने –और उसके प्रति निष्ठावान रहने – के लिए हम स्वयं पर भरोसा नहीं कर सकते। हम कुछ समय के लिए निष्ठावान रह सकते हैं, जैसा चेले थे परन्तु किसी न किसी बिन्दु पर हमारी आंखें, हमारे मन और हमारे ह्रदय हमें धोखा दे देते हैं और हम

2 यूह. 15:13.15

आगे अनुसरण नहीं करते। हम तो उसके भी विरुद्ध हो सकते हैं जिसे हमने देखा और कभी प्यार भी किया था।

यीशु ने अपने शिष्य थोमा से कहा, "धन्य वे हैं जो विश्वास करते हैं जबकि उसे देखा नहीं है।"

यहां पृथ्वी पर यीशु हम से चाहते हैं कि हम अपने दिलों की आंखों से देखें और विश्वास करें, अर्थात ग्रहण करे, अनुसरण करें, आज्ञापालन करें, आराधना करें। यीशु आपसे एक असली सम्बंध, एक मित्रता चाहते हैं! हम एक दिन महिमा में प्रवेश करेंगे जहां हमारी नजरें शुद्ध और हमारे हृदय स्थिर होंगे और हम उसे अपनी आंखों के सामने देखेंगे। परन्तु अभी के लिए हमें विश्वास करने का आह्वान दिया गया है।

?

क्या आप महसूस करते हैं कि आप यीशु को अपने ह्दय की आंखों से "देख रहे हैं?"

खजाना

यीशु को "देखना" और उस पर विश्वास करना इतना कठिन क्यों है? क्यों पूरा संसार यीशु के बारे नहीं सुनता और विश्वास करता है?

जब मैं धर्मशास्त्र को पढ़ता हूं, मैं आश्चर्यचकित होता हूं कि परमेश्वर कैसे कार्य करता है। समय के आरम्भ से, परमेश्वर के द्वारा सब मनुष्यों को बराबरी से प्रेम करने के बावजूद कुछ लोग परमेश्वर को *"जानते"* थे और कुछ नहीं। इसे समझ–बूझ सकना और समझा पाना असम्भव है और रहेगा।

यीशु के समय भी जब वह धरती पर चलता–फिरता, प्रवचन देता और आश्चर्यकर्म करता यह सब बिलकुल वैसा ही था। कुछ उसके चरणों पर गिरे और बोले, *"आप प्रभु हैं!"* कुछ उस पर तुच्छ दृष्टि डाले, उसका मजाक उड़ाए और उसके अधिकार को चुनौती दिए। ऐसा कैसे हो सकता है? कैसे एक मनुष्य ख्रीष्ट को देखे और उसमें परमेश्वर देख सके और दूसरा भी उसी समय ख्रीष्ट को देखे और उसे सिर्फ मनुष्य दिखाई दे? मैं इसे नहीं समझा सकता!

परन्तु यीशु के सम्पूर्ण जीवन और शिक्षा में मैंने यह देखा है कि उसने स्वयं को शान्तिपूर्ण तरीके से और गहराई से प्रगट किया। बहुत गहराई से और बहुत गंभीरता से! जब एक व्यक्ति ने सच में यीशु को वह क्या था करके देखा – परमेश्वर हमारे साथ –

प्रकाशन उस व्यक्ति के दिल तक पहुंचा और उन्हे सदा के लिए बदल दिया। परन्तु चूंकि यह प्रकाशन अत्यधिक गहरा और शुद्ध और शान्त है, वह हम में से अधिकांश के आगे से बिना पहचाने निकल जाता है। हम जीवन के आपाधापी के अत्यधिक शोर और ईच्छाओं से इतने विचलित हो जाते हैं कि परमेश्वर की गहरी बातें हमारे सामने से बिना ध्यान खींचे निकल जाती हैं।

यीशु ने इस सच्चाई को एक छोटे दृष्टांत के द्वारा समझाया। उसने कहा, "स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाया और छिपा दिया, और मारे आनन्द के जाकर अपना सब कुछ बेच दिया और उस खेत को मोल ले लिया।"[3]

?

क्या आप महसूस करते हैं कि यीशु एक खजाना है जिसे आप देखना आरम्भ कर रहे हैं परन्तु आप के आस पास के अनेक लोग नहीं देख सकते?

3 मत्ती 13:44

लहू

यीशु की कहानी अद्‌भुत है! हमें बताया गया है कि वह हमें हमारे पापों और *"दागों"* से स्वतन्त्र करने परमेश्वर की तरह आया। आप जानते हैं, हमारे सबसे घृणित पाप आम तौर पर खून का निशान छोड़ते हैं। लहू, लोगों का जीवन श्रोत वहां बिखर जाता है जहां हिंसा होती है, जहां दुराचार है, जहां दुर्भाग्य है और जहां मृत्यु है। चाहे प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष यह हम सब के हाथों में है। हम गुलामी और दुराचार पर बने संसार में रहते हैं और हम सब ने या तो लहू बहाया है या चोरी का सामान का उपभोग किया है जिसमें लोगों का खून पसीना लगा है। यह कठोर और असहज करने वाला सत्य है – परन्तु हत्या हमारे संसार के अंधियारे का और परमेश्वर से हमारे अलगाव का केन्द्र बिन्दु है।

अतः यीशु आता है और वह हमें इस पाप और अंधकार से स्वतन्त्र करना चाहता है। वह हमें उस गलत से स्वतन्त्र करना चाहता है जो हमने सहा है और जो हमने किया है। वह प्रत्येक मन, प्रत्येक हृदय और यहां तक कि जिस देश में हम रहते हैं उसको चंगा करके पुनर्स्थापित करना चाहता है। हमें बताया गया है कि यीशु ने इस *"छुटकारे"* और "क्षमा" के लिए यह अद्‌भुत आत्मिक मार्ग खोला है: ***यीशु ने हमारे पाप अपने शरीर और व्यक्तित्व पर उठा लिया और उन्ही कें साथ प्राण त्याग दिया।*** बाइबिल का

एक पद इसे इस तरह बताता है: *"... उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया ... ।"*[4]

यीशु ने मेरे अपराध और लज्जा को अपने उपर ले लिया और तब उसके साथ प्राण त्याग दिया। मेरे पापों के साथ मरने के बाद यीशु मृतकों में से जी उठा परन्तु मेरे पाप उसके साथ वापस नहीं आए। कहने को उसने मेरे पापों को कब्र में ही छोड़ दिया। यीशु ने मेरे पाप उठा लिया उसके साथ मर गया और मेरे लिए सिर्फ क्षमा और नया जीवन के साथ वापस आया।

बाइबिल का एक शक्तिशाली पद इसका वर्णन इस तरह करता है: यीशु का लहू हमारे पाप के लहू की अपेक्षा "बेहतर बातें बोलता है।"

इस कारण जब हम यीशु पर विश्वास करते और उसकी क्षमा को स्वीकार करते हैं, हम उसके बलिदान के लहू, "यीशु के लहू" के लिए उसके आभारी हैं।

?

क्या आप उसके लहू से "धुलना" चाहेंगे ?

4 2 कुरंथियों 5:21

आत्मा

यीशु जीवित है! वह सशरीर या भौतिक है और वह स्वर्ग में है। एक दिन आप उससे "आमने सामने" मिल सकेंगे।

परन्तु जब यीशु अपने चेलों से यह बात कह रहे थे कि वह शीघ्र ही पृथ्वी को छोड़कर स्वर्ग जाने वाले हैं, वह उनसे कह रहे थे कि उन्हे इस पर आनन्दित होना चाहिए – दुखी नहीं – क्योंकि इसका अर्थ था कि पवित्र आत्मा उनके पास आएगा और "उनमें" होगा।[5]

आप देख रहे हैं, जब यीशु इस पृथ्वी पर थे, वह सिर्फ मानवरूप में थे। यदि वे किसी एक गांव में थे इसका अर्थ था कि वह अन्य गांव में नहीं थे। यदि यीशु किसी एक मनुष्य के उपर अपनी शान्ति का हाथ रख रहे थे, उसका अर्थ था कि वह किसी अन्य के उपर अपनी शान्ति का हाथ नहीं रख रहे थे। वह मानवरूप में थे और इसलिए हमारी ही तरह स्थान और समय की सीमा में सीमित थे।

जब यीशु स्वर्ग पर चढ़ गए, तब यीशु का आत्मा, *पवित्र आत्मा,* अब सारी पृथ्वी के उपर उंडेला गया। इसका अर्थ हुआ कि यीशु का व्यक्तित्व और शान्ति एक ही समय में प्रत्येक गांव में और प्रत्येक व्यक्ति के घर और हृदय में हो सकता है। इसका अर्थ यह भी हुआ कि यीशु सचमुच में सिर्फ हमारे साथ चल ही नहीं पर हमारे भीतर निवास भी कर सकते हैं।

5 यूह. 14:17,26,28

अब जब यीशु ने पृथ्वी पर अपना मिशन पूरा कर लिया था – हमें क्षमा और अनन्त जीवन देने के लिए मरने और जीवित होकर उठने के लिए – वह शारीरिकरूप में स्वर्ग में जीवित है। अब हम पवित्र आत्मा के द्वारा उससे जुड़ते हैं।

जब हम यीशु पर विश्वास करते हैं वह पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे पास आता है और हमारे हृदय, हमारे मन और हमारी आत्मा में निवास करता है – "परमेश्वर हमारे साथ।"

क्या आप यीशु पर विश्वास करना और आपके हृदय और जीवन में उसका पवित्र आत्मा पाना चाहते हैं?

निमंत्रण

यीशु ने कहा, *"द्वार मैं हूं: यदि कोई मेरे द्वारा प्रवेश करे, तो उद्धार पाएगा ..."।* (यूह. 10:9)

क्या आप यीशु को अपने जीवन और हृदय में अभी इसी समय आमंत्रि.त करना चाहेंगे ?

यह एक आत्मिक निर्णय है और यीशु को जीवन देने के द्वारा आप पापों की क्षमा और अनन्त जीवन प्राप्त करेंगे। आप जिस क्षण यीशु को जान जाते हैं आप एक नई राह पर हैं और वह ऐसा है *"जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है।"* (नीतिवचन 4:18)

यहां आपको बताया जा रहा है कि आप कैसे मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश करते और यीशु को जानते हैं। यहां "करने के लिए" दो कुंजी चीजें दी जा रही हैं। मैं इन्हे नीचे दे रहा हूं और एक कागज पर एक प्रार्थना लिखी है जिसे आप पढ़ सकते और दिल से "प्रार्थना" कर सकते हैं:

1. पाप से पश्चातापः

आपको अपने पापों से पश्चाताप् करना होगा। जी हां, यह एक कठिन कदम है पर ऐसा जिसकी मांग यीशु करता है। आपको अभी

यह निर्णय लेना होगा कि परमेश्वर की सहायता से आप अपने जीवन में पाप से पीछे लौटेंगें –*रूपया का लोभ, वासना, लालच, बेईमानी, लत, व्यभिचार, अश्लील साहित्य, इत्यादि।*

पाप से पश्चाताप् "हृदय का एक निर्णय" है और समय के साथ इसे आपके जीवन और घर में दिखाई देना चाहिए। ऐसी चीजें हो सकती हैं जिन्हे आपको काटने, संप्रेषित करने, फेंकने, बन्द करने, छोड़ने की आवश्यकता हो सकती है ...। यदि आप अभी पश्चाताप् करना और *"लौटना"* चाहते हैं (पश्चाताप् का यही अर्थ है), आप अगले कदम के लिए सही दिशा की ओर देख रहे हैं।

2. यीशु ख्रीष्ट में विश्वासः

हमने किसी भी वास्तविक सम्बंध में विश्वास और भरोसा के महत्व पर विचार कर लिया है। यीशु हमें उस पर "विश्वास" करने कहता है। यीशु हमें विश्वास का यह कदम उठाने और उस पर भरोसा रखने की जोर से घोषणा करने कहता है। मैंने नीचे एक प्रार्थ्रना लिख दिया है जिसे आप अपना बना सकते हैं। यह प्रार्थना आपके दिल से और पूरी गंभीरता से निकलना चाहिए।

यदि आप अपने पापों से पश्चाताप् करते और यीशु ख्रीष्ट पर अपना विश्वास प्रगट करते हैं, वह इसी समय आपके हृदय मे अपना पवित्र आत्मा डालेगा, आपके पापों को क्षमा करेगा और आपका नाम स्वर्ग में लिख लेगा!

प्रार्थनाः

प्रिय प्रभु यीशु, मुझसे प्रेम करने के लिए मैं आपको धन्यवाद कहता हूं। मैं आपको मेरे पापों के निमित्त मरने के लिए धन्यवाद कहता हूं। मुझे क्षमा और अनन्त जीवन देने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

आज मैं अपने पापों से पश्चाताप् करता हूं और आप के उपर अपना विश्वास और भरोसा रखता हूं। मैं आपसे अपने पापों की क्षमा मांगता हूं और मुझ में आपका पवित्र आत्मा उंडेलने की प्रार्थना करता हूं।

प्रभु, मुझे क्षमा करने के लिए आपको धन्यवाद। प्रभु यीशु मुझे बचाने के लिए धन्यवाद। अब मेरी सहायता कीजिए कि जब तक मैं आपको आमने सामने न देखूं तब तक आप विश्वासयोग्य रहने और अपने जीवन भर आपका अनुसरण करने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन!

नया जीवन

यदि आपने यीशु पर विश्वास करने का यह कदम उठा लिया है, आप उद्धार पा चुके हैं! आप क्षमा प्राप्त कर चुके! आप एक *"नई सृष्टि"* है। यही परमेश्वर का सत्य है। यही यीशु का सन्देश है।

एक नया विश्वासी होने के कारण यह सचमुच महत्वपूर्ण है कि आप प्रतिदिन बाइबिल पढ़ना और यीशु से छोटी प्रार्थना करने में कुछ समय लगाना आरम्भ करें। यह भी महत्वपूर्ण है कि आप किसी अच्छे मसीही चर्च से जुड. जाएं ताकि आप अपने विश्वास में अन्य मसीहियों के सहयोग से आगे बढ़ें।

यदि आपके पास बाइबिल नहीं है तो मेरी सलाह होगी कि आप एक प्राप्त करें। मैं आपको सलाह देता हूं कि आप "ऑन लाईन" या किसी मसीही पुस्तक दुकान से एक अच्छी हिन्दी बाइबिल प्राप्त करें।

मैं प्रतिदिन एक अध्याय पढ़ता हूं। मेरी सलाह होगी कि आप **लूका के सुसमाचार** से आरम्भ करें और उससे आगे बढ़ते जाएं।

एक अच्छा विश्वासयोग्य चर्च की खोज करें। प्रभु यीशु से इसका निर्णय लेने के लिए प्रार्थना कीजिए। किसी मसीही से जिसे आप जानते हैं और उस पर भरोसा करते हैं किसी चर्च की सलाह लीजिए। यह निश्चय जान लीजिए कि सप्ताह में एक दिन चर्च

जाना आपकी प्राथमिकता और प्रभु के लिए "बलिदान" है। ऐसा करने के लिए हो सकता है कि आपको अपनी दिनचर्या और अर्थव्यवस्था में कुछ बदलाव करना होगा। *इसके लिए प्रभु आपका आदर करेंगे!*

आपसे सुनने से मुझे प्रसन्नता होगी! यदि आपने विश्वास का यह कदम मेरे वेब साईट से पढ़कर या इसे पढ़कर उठाया है तो मुझे ई मेल करिए और आपके बारे जानने दीजिए। मैं भी आपके साथ आनन्दित होऊँगा और आपके लिए प्रार्थना करूंगा!

मेरे भाई, मेरी बहन आपको आशीष मिले! जब तक हम –पारिवारिक मिलन मे! –एक दूसरे को न मिलें परमेश्वर आपको यीशु के नाम में आशीष दे, आपकी रक्षा करे और आपको समृद्धि प्रदान करे!

अधिक जानकारी के लिए कृपया नीचे दिए गए मेरे वेब साईट पर सर्च कर लें:

www.1peter1three.weebly.com

"यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे; यहोवा तुझ पर आपने मुख का प्रकाश चमकाए, और तुझ पर अनुग्रह करे; यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे, और तुझे शान्ति दे।"
गिनती 6:24–26

उद्धरित धर्मशास्त्र

परमेश्वर हमारे द्धारा विनती कर रहा है ... कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो। 2 कुरंथियों 5:20

सिर्फ ख्रीष्ट को, उसके वचन को और उसकी आत्मा को जानना: 1 कुरंथियों 2:2–3

बाइबिल की प्रेरणा और उसका दुरूपयोग: इब्रानी 4:12; यिर्मयाह 29:13; (मत्ती 4:1–11 एवं 2 कुरं. 4:2)

धर्मशास्त्र के अनौपचारिक क्षिक्षाप्राप्त लेखक: प्ररित 4:13

यीशु का अर्थ है, "प्रभु बचाता है": मत्ती 1:21

यीशु मानवरूप में परमेश्वर: यशायाह 7:14; मत्ती 1:23; यशा.9:6; यूहन्ना 1:1–5,9,14; 8:55 / निर्गमन 3:14; यूह. 10:30; 14:9; 9:38; / मत्ती 14:33; निर्गमन 20:5; यूह. 5:46; कुलुस्सियों 1:15–20; इब्रानियों 1:3; फिलिप्पियों 2:6–11; जकर्याह 14:9 / प्रेरित 4:12; प्रकाशितवाक्य 1:13–18

पाप क्षमा करने और अनन्त जीवन देने का यीशु का उद्देश्य: लूका 5:24; यूह. 11:25–26; 4:13–14

प्रकाशन, समझने में असंभव: यूह. 6:37, 65; मत्ती 16:16–18; रोमियों 11:33–36; यशायाह 55:8–9; भजन 36:9; 2 कुरंथियों 4:6; यूह.4:24; और 6:63

ख्रीष्ट में विश्वास: यूह. 7:37–38; 11:25–26; 9:35; मत्ती 11:28–30; लूका 5:24; 10:20; यूह.10:9; 5:39–40; 15:13–15

देखना विश्वास करना नहीं होता: यूह. 11:45, 53; मत्ती 26:56, मरकुस 15:25; (प्रातः के 9 बजे) यूह. 20:29; 2 कुरंथियों 4:6; 5:7; 1 यूह. 3:2; 1 कुरं. 13:12

परमेश्वर सब से बराबरी से प्यार करता है: 2 पतरस 3:9; 1 तिमोथी 2:4; मत्ती 18:14; यूह. 3:16

ख्रीष्ट की उपासना और ख्रीष्ट का तिरस्कार: यूह. 9:38; मत्ती 14:33; यूह.10:20; 2 कुरंथियों 5:16

गहरा और गंभीर प्रकाशन: मत्ती 16:20; मरकुस 1:24, 34, 44; 4:11; यशायाह 6:9; 2 कुरंथियों 5:16; भजन 42:7; मत्ती 13:44

लहू और ख्रीष्ट में स्वतंत्रता: यशायाह 1:18; भजन 25:15; 2 कुरंथियों 5:17; गलातियों 2:20; लूका 4:18/यशा. 61:1; यशायाह 42:3; 2 इतिहास 7:14; 2 कुरंथियों 5:21; इब्रानियों 9:22; 12:24

आत्मा: यूह. 14:1–4; प्रकाशितवाक्य 1:13–18; 1 कुरथिंयों 13:12; यूह. 14:17, 26, 28

निमंत्रण और नया जीवन: इफिसियों 1:13–18; कुलुस्सियों 1:27; नीतिवचन 4:18; यूह. 5:24; मरकुस 1:15; मत्ती 3:8; प्रेरितों 3:19; रोमियों 10:9; लूका 10:20; 2 कुरंथियों 5:17; इब्रानियों 10:25; भजन 1; यहोशू 1:9; इब्रानियों 4:12/2 तिमोथी 3:16

यह अनुवाद सन्डे स्कूल सेन्टर की उदार
आर्थिक सहायता से संभव हो सका है:
www.sunday-school-center.com